ISSN - 2229-3620

LSO

शोध संचार बुलेटिन

July-September, 2022
Vol. 12, Issue 47
Page Nos. 57-60

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

भारतीय इतिहास में महिला सशक्तिकरण और महारानी लक्ष्मीबाई

डॉ0 अजय पाल सिंह*

शोध सारांश

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के रूप में पहली लड़ाई 1857 ई. की क्रांति को माना जाता है। यद्यपि कुछ इतिहासकार इससे इत्तेफाक नहीं रखते। हालांकि सामान्यतः इसे स्वतंत्रता आन्दोलन मान लिया जाता है। जब हम स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास का अध्ययन करते हैं, तो कई क्रांतिकारियों की चर्चाएँ मिलती है। उनमें झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई को आज भी पूरे सम्मान के साथ याद किया जाता है। उनका नाम लेते ही शौर्य और साहस का भाव उमड़ पड़ता है। प्रस्तुत शोध पत्र में यह जानने का प्रयास किया गया है कि क्या प्राचीन भारत से लेकर स्वतंत्रता आंदोलन की शुरूआत तक कोई और ऐसा था, जो पुरुषों के साथ महिलाओं में भी मर मिटने की प्रेरणा भर सके? क्या सचमुच महारानी लक्ष्मीबाई महिला सशक्तिकरण की परिचायक हैं?

Keywords : महिला सशक्तिकरण, स्वतंत्रता आन्दोलन, महारानी लक्ष्मीबाई, अंग्रेज, ह्यूरोज।

प्रस्तावना : सदियों की गुलामी के फलस्वरूप भारतीय समाज में सामान्यतः महिलाएँ अबला कहलाने लगी थीं। उन्हें घर की चहारदीवारी तक सीमित कर दिया गया था। शनैः शनैः बढ़ती कुण्ठा ने घर में बालिका के जन्म को अशुभ करार कर दिया। जन्म लेते ही नृशंसतापूर्वक उसकी हत्या हो जाती अथवा उसे त्याग दिया जाता। बावजूद इसके जो बालिकाएँ सौभाग्यशाली समझी जातीं, उनमें से भी अधिकतर सांसारिकता से सर्वथा अनभिज्ञ विवाह बंधन में बंध जातीं। दुर्दैववश यदि किसी अबोध बालिका के पति की मृत्यु हो जाती, तो सती होने की बाध्यता अथवा सामान्य स्वीकार्यता देखने को मिलती थी। जो सती नहीं होतीं, उन्हें जीवन–भर विधवा होने की तमाम तरह की समस्याएँ झेलनी पड़ती।

परिस्थितियाँ कुछ ऐसी निर्मित हो गयी थीं, कि महिलाएँ शत्रु के समक्ष शस्त्र उठाने की अपेक्षा धधकती अग्नि में जौहर (जौहर –पुराने समय में स्त्रियों द्वारा की जाने वाली वह क्रिया थी, जिसके माध्यम से वह अपनी देह हो प्रकृति के हवाले कर देती थी। बड़े–बड़े कुण्ड बने हुए थे, जिसमें लकड़ियाँ डालकर आग लगा दी जाती थी और उसमें छलांग लगाकर स्त्रियाँ स्वयं को अग्नि के हवाले यानी जला लेती थीं) कर लिया करती थीं।[1] इसे एक सुखद आश्चर्य माना जाएगा कि इन विपरीत परिस्थितियों में भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में महिला सशक्तिकरण की परिचायक बनीं– महारानी लक्ष्मीबाई।

शोध का उद्देश्य : प्रस्तुत शोध–पत्र यह समझने का प्रयास है कि क्या प्राचीन भारत से लेकर आधुनिक भारत तक महिलाएँ कभी सशक्त रहीं? तत्कालीन भारत में महिला सशक्तिकरण का दौर था या कि परिस्थितियों ने झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई को महिला सशक्तिकरण की परिचायक बना दिया? यह जानना कि वस्तुतः महिला सशक्तिकरण होता क्या है? क्या स्वतंत्रता आन्दोलन में महारानी लक्ष्मीबाई के दौर में महिला सशक्तिकरण का कोई अन्य उदाहरण भी मिलता है? क्या महारानी लक्ष्मीबाई वर्तमान परिस्थितियों में महिलाओं के सशक्तिकरण की प्रेरणा बन सकती हैं?

विषयवस्तु : सर्वप्रथम यह जानने का प्रयास करें कि महिला सशक्तिकरण किसे कहते हैं? महिला सशक्तिकरण को परिभाषित करते हुए कह जा सकता है कि समाज में महिलओं को उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिये उन्हें सक्षम बनाना, महिला सशक्तिकरण है।[2] समाज में महिलाएँ जब अपने जीवन से जुड़े सभी फैसले स्वयं ले सके और समाज में अच्छे से रह सके, तो महिला सशक्तिकरण की स्थिति निर्मित होती है।

प्राचीन भारत में महिलाओं की स्थिति को सामान्यतः सशक्त माना जा सकता है। प्राचीन भारत की ज्ञात प्रथम सभ्यता, जो कि हड़प्पा सभ्यता कहलाती है, जो कि मातृसत्तात्मक थी। खुदाई में मिट्टी की बनी हुई कई खड़ी एवं अर्द्ध नग्न मूर्तियाँ मिली हैं, जो सम्भवतः मातृदेवी या प्रकृति देवी की मानी जाती हैं।

*सहायक प्राध्यापक – इतिहास, राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बिकापुर, सरगुजा, छ0ग0

जिससे अनुमान लगाया जाता है कि महिलाओं को समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त था।[3] प्राचीन भारत की दूसरी ज्ञात सभ्यता वैदिक सभ्यता कहलाती है। वैदिक सभ्यता की जानकारी का प्रमुख स्रोत वेद है। वेद चार हैं– ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद व अथर्ववेद। वेद मानव सभ्यता के सबसे पुराने लिखित दस्तावेज हैं।[4] चारों वेदों में सैकड़ों महिला विषयक मंत्र दिए गये हैं। जिनसे स्पष्ट होता है कि वैदिक काल में महिलाओं का समाज में विशिष्ट स्थान था। उन्हें पुरुषों के समान जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बराबर का दर्जा प्राप्त था।[5] ''शिक्षा सामाजिक सशक्तिकरण के लिए मूलभूत साधन है। यह माना जाता है, कि शिक्षा ही वह उपकरण है, जिससे महिला समाज में अपनी सशक्त, समान व उपयोगी भूमिका की अनुभूति करा सकती है। शिक्षा के आधार पर सहज ही महिला में दक्षता, कौशल, ज्ञान एवं क्षमताओं का विकास होता है। शिक्षित महिला न केवल स्वयं लाभान्वित होती है, बल्कि उससे भावी पीढ़ी भी लाभ प्राप्त करती है।[6] वैदिक काल में महिलाओं की शिक्षा–दीक्षा की उत्कृष्ट व्यवस्था थी। सबसे प्राचीन वेद ऋग्वेद में 24 विदुषियों का उल्लेख मिलता है, जो कि अग्रांकित हैं– सूर्यासावित्री, घोषकाक्षीवती, सिकता निवावरी, इंद्राणी, यमी वैवस्वती, दक्षिण प्रजापात्या, अदिति, वाक आम्भृणी, अपाला आत्रेयी, जुहू ब्रह्मजायो, अगस्त्यस्वसा, विश्ववारा आत्रेयी, उवर्वी, सरमा देवशुनि, देवजामयः, श्रद्धा कामायनी, नदी, सर्पराज्ञी, गोधा, शश्वती आंगिरसी, वसुक्रपत्नी,, रोमशा ब्रह्मवादिनी।[7] मौर्य काल में मेगास्थनीज ने लिखा है कि इस देश (भारत) में महिलाओं को वेद–वेदान्त और न्याय आदि पढ़ने की पर्याप्त स्वतंत्रता थी। वह आगे लिखता है कि किसी कारण विशेष से महिला को अपने पति से अलग होने की आज्ञा थी, इसी तरह कारण विशेष से पति को भी महिला से अलग होने की आज्ञा थी। भारतीय इतिहास में प्राचनी व मध्य इतिहास के संक्रमण काल यानि राजपूत काल के विषय में रमाशंकर त्रिपाठी लिखते हैं कि राजपूत काल को कश्मीर की रानी दिद्दा (900 से 1003 ई.) व काकतीय रानी रुद्राम्बा (1261 से 1290 ई.) जैसी प्रशासक महिलाओं का भी गौरव प्राप्त है। पश्चिमी चालुक्यों के अभिलेखों से विदित होता है कि रानियाँ प्रांतीय शासन की बागडोर भी संभाला करती थीं। सोमेश्वर प्रथम आहन महल की एक पत्नी मैलादेवी 1053 ई. में बनवासी प्रांत पर शासन करती थीं और विक्रमादित्य षष्ठम् की अग्रमहिषी लक्ष्मीदेवी 1095 ई. में 18 अग्रहारों की देखरेख करती थीं।[8]

भारतीय इतिहास के मध्यकाल को दो भागो में बांटा जाता है– सल्तनत काल व मुगल काल।[9] सल्तनत काल में सुल्तान रुक्नुद्दीन फिरोजशाह की मृत्यु पश्चात् रजिया ने उचित अवसर देखकर दिल्ली सल्तनत की सत्ता पर अधिकार कर लिया। रजिया को जनता का पूर्ण समर्थन मिला। किंतु विरोध किया तुर्क अमीरों ने। मिनहाज के अनुसार रजिया ने तीन वर्ष छह मास और छह दिन शासन किया। मिनहाज के शब्दों में, ''सुल्तान रजिया एक महान शासक थीं– बुद्धिमान, न्यायप्रिय, उदारचित्त और प्रजा की शुभचिंतक, समद्रष्टा, प्रजापालक और अपनी सेनाओं की नेता। उसमें शासकों के सभी गुण विद्यमान थे– सिवाय नारीत्व के और इसी कारण मर्दों की दृष्टि में उसके सब गुण बेकार थे।''[10] हालांकि बावजूद इसके कि तुर्क मलिकों और अमीरों ने रजिया की हत्या कर दी, यह कहा जा सकता है कि भारत की आम जनता ने महिला की योग्यता को देखते हुए, उसे अपना शासक स्वीकार कर लिया था। मुगलकाल की बात करें तो हुमायुँ की बहन गुलबदन बेगम द्वारा हुमायूँ की जीवनी के रूप में प्रसिद्ध पुस्तक 'हुमायूँनामा' लिखना,[11] स्त्री शिक्षा का उदाहरण प्रस्तुत करता है। मुगलकाल में ही एक ऐसी महिला का उदाहरण मिलता है, जो कि तत्कालीन बादशाह अकबर के खिलाफ खड़े होने का साहस रखती है। गढ़ मंडला के शासक संग्राम शाह के पुत्र दलपत शाह से 1542 ई. में कशोरी दुर्गावती का विवाह हुआ। 1550 ई. में दलपत शाह की मृत्यु हो गई। पति की असमय मृत्यु के बाद दुर्गावती ने दीवान और मंत्री की सलाह से नाबालिग वीरनारायण को राजा की पदवी दे कर वास्तविक शक्ति स्वयं अपने हाथों में ले ली। रानी दुर्गावती के राज्य की उत्तर पश्चिमी सीमा मुगल राज्य से टकराने लगी। मुगल सम्राट अकबर अपनी साम्राज्यवादी नीति के वशीभूत 1564 ई. में आसफ खाँ के नेतृत्व में आक्रमण कर दिया। मुगल सेना और रानी दुर्गावती के बीच भीषण युद्ध हुआ। प्रारंभिक युद्ध में आसफ खाँ को पराजित हो कर भागना पड़ा। किन्तु विशाल सैन्यबल के साथ मुगल सेना के पुनः आक्रमण में रानी दुर्गावती को वीरगति का वरण करना पड़ा। हालांकि यह भी कहा जाता है कि इसके पीछे रानी दुर्गावती के घरभेदी सरदारों की मुख्य भूमिका रही। यहाँ रानी दुर्गावती का वह कथन उल्लेखनीय है, जिसे रानी ने तब कहा था, जब उसका एकमात्र पुत्र युद्ध भूमि में आहत हो कर मृत्यु शैय्या पर पड़ा था। जब संवादवाहकों से अपने पुत्र की मृत्यु की सूचना मिलती है, तो रानी दुर्गावती कहती हैं कि, ''संवादवाहकों! जाओ देश की रक्षा में तुम भी जुझ मरो, अगर मेरे पुत्र ने मातृभूमि की सेवा, स्वाधीनता के लिये अपने प्राण गवाए हैं तो आज मेरी कोख धन्य हो गई।'' पराजय की स्थिति देखकर रानी दुर्गावती ने अपने महावत आधार सिंह बघेला से कहा कि मुझे इस तेज कटार से समाप्त कर दो। जब आधार सिंह इस कार्य के लिये तैयार नहीं हुए तो रानी दुर्गावती ने स्वयं अपनी ही कटार से अपना अंत कर दिया।[12] इस प्रकार, भारतीय इतिहास का मध्यकाल में भी वीरांगनाओं के उदाहरण मिलते हैं।

मुगलों के बाद भारत ईस्ट इंडिया कंपनी का गुलाम बना। 1757 ई. में बंगाल के नवाब की विशाल सेना को संख्या में अपेक्षाकृत काफी कम भारत ईस्ट इंडिया कंपनी के अंग्रेज सैनिकों ने पराजित कर दिया।[13] 1764 ई. में बक्सर के युद्ध में तो अंग्रेजी

सैन्य क्षमता का लोहा मान लिया गया। बंगाल का नवाब, अवध का नवाब और मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय की संयुक्त सेनाओं को अंग्रेजी सेना ने परास्त कर दिया।[14] अब ऐसा प्रतीत होने लगा कि कोई भारतीय शक्ति शेष नहीं, जो कि भारत ईस्ट इंडिया कंपनी की सैन्य शक्ति का मुकाबला कर सके। शायद यही वजय रही कि पहले सहायक संधि नीति और फिर हड़प नीति के तहत भारतीय राज्यों को अंग्रेज हड़पने लगे। इसी क्रम में झांसी के राज्य को भी ईस्ट इंडिया कंपनी ने हड़पना चाहा।

मुख्य अंश : किसी को क्या पता था कि झांसी को हड़पने की कोशिश में ईस्ट इंडिया कंपनी भारत की सत्ता प्राप्ति के सुख से वंचित हो जाएगा और भारत को ऐसी वीरांगना की प्रेरणा मिल जाएगी कि जिससे प्रेरणा पाने के लिये उसके नाम से भारत की आजादी की जंग में निर्णायक भूमिका निभाने वाली आजाद हिंद फौज की एक रेजिमेंट का नाम रखा गया– झांसी की रानी रेजिमेंट।[15] आजाद भारत में भी महिलाओं की प्रेरणा और साहस के लिये आज भी महारानी लक्ष्मीबाई का नाम लिया जाता है।

महारानी लक्ष्ममीबाई का जन्म 19 नवंबर, 1835 ई. को हुआ था।[16] उनके बचपन का नाम मनु था। मनु बचपन से ही शास्त्रों के साथ शस्त्र की भी शिक्षा लिया करती थी। सन् 1842 ई. में झांसी के महाराजा गंगाधर राव के साथ मनु का विवाह हुआ था। विवाह के बाद मनु का नाम लक्ष्मीबाई रखा गया और अब वे झांसी की रानी लक्ष्मीबाई कहलाने लगीं। सितंबर 1851 ई. में रानी लक्ष्मीबाई ने एक पुत्र को जन्म दिया। परन्तु मात्र 4 माह के अन्दर पुत्र की मृत्यु हो गई। इधर 1853 ई. में झांसी नरेश गंगाधर राव का स्वास्थ्य अत्यधिक खराब रहने लगा। ऐसे में उन्हें दत्तक पुत्र लेने की सलाह दी गयी। पुत्र गोद लेने के बाद 21 नवंबर, 1853 ई. को महाराज गंगाधर राव की भी मृत्यु हो गई। दत्तक पुत्र का नाम दामोदर राव रखा गया।[17] सोचा गया कि अब दामोदर राव झांसी का राजा होगा। किन्तु तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी ने रानी लक्ष्मीबाई के दत्तक पुत्र को उनके पति का उत्तराधिकारी मानने से मना कर दिया और विलय की नीति के तहत झांसी को उनसे छीन लिया।[18] रानी को यह बर्दाश्त नहीं था कि कोई उसके राज्य को छीन कर उसे गुलामी का एहसास कराए। झांसी में 05 जून, 1857 ई. को विद्रोह प्रारंभ हो गया। रानी लक्ष्मीबाई के विद्रोह को कुचलने के लिये 23 मार्च, 1857 ई. को सर ह्यूरोज ने झांसी को घेर लिया। रानी ने 8 दिनों तक कड़ा संघर्ष किया। अपने शौर्य से अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए। किन्तु कुछ देशद्रोहियों के कारण अंग्रेजी सेना किले में घुस गई। रानी ने ऐसी स्थिति में किले से बाहर निकलकर कालपी की ओर रवाना हो गईं। कालपी से ग्वालियर पहुँची। सिंधिया अंग्रेजों का समर्थक था, किन्तु उसकी सेना विद्रोहियों (झांसी की सेना) के साथ मिल गई। रानी के जबरदस्त हमलों से भयभीत अंग्रेज सेनापति स्मिथ को जान बचाकर भागना पड़ा। इसी समय ह्यूरोज अपनी सेना के साथ महारानी लक्ष्मीबाई पर हमला बोल दिया।[19] 18 जून 1858 ई को ग्वालियर का अंतिम युद्ध लक्ष्मीबाई और अंग्रेजी सेना में हुआ। महारानी लक्ष्मीबाई वीरतापूर्वक लड़ते हुए वीरगति प्राप्त की।[20]

एक रानी अपने राज्य को पाने के प्रयास में मृत्यु का वरण कर लिया। इसमें ऐसी क्या बात थी, कि आज भी उसका नाम महिलाओं में ही नहीं वरन् पुरुषों में भी प्रेरणा, साहस व शौर्य प्रदान करता है। वास्तव में, यहाँ महारानी लक्ष्मीबाई के समय की परिस्थितियों को समझते हुए महारानी के विचारों व महारानी पर लोगों के विचारों का विश्लेषण उचित होगा। जब अंग्रेजी सेना ने झांसी को हथियाना चाहती थीं, तो रानी ने साहस भरे शब्दों में कहा था कि ''मैं अपनी झांसी किसी भी कीमत पर नहीं दूँगी।'' महारानी लक्ष्मीबाई की मृत्यु पर जनरल ह्यूरोज ने कहा था– ''भारतीय क्रांतिकारियों में यहाँ सोयी हुई (वीरगति को प्राप्त हुई) औरत अकेली मर्द है।''[21] झांसी की रानी कहा करती थीं कि हम लड़ेंगे ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियाँ आजादी का उत्सव मना सकें। महारानी लक्ष्मीबाई ने कहा था कि, मैं झांसी की रानी हूँ और इस धरती माँ की बेटी। मेरे होते हुए कोई भी फिरंगी झांसी को हाथ नहीं लगा सकता, मैं अपनी झांसी कभी नहीं दूंगी चाहे इसके लिये मुझे अपनी जान भी क्यों न देनी पड़े, झांसी मेरी आन है... शान है... ईमान है।[22]

परिणाम व सुझाव : झांसी की रानी ने अंग्रेजों के खिलाफ तब शस्त्र उठाया जब महिलाओं को कमजोर समझा जाता था। उस समय समाज कई तरह की कुरीतियों से ग्रसित था। कुछ वर्ष पूर्व ही भारतीय पुनर्जागरण के पिता कहलाने वाले राजा राममोहन रॉय ने सती प्रथा के विरोध में स्वयं को झोंक दिया। बड़ी मुश्किल से 1829 ई. में सती प्रथा निषेध अधिनियम लागू किया जा सका।[23] अलबरूनी कहता है कि ''विधवा का एकमात्र विकल्प सती होना था। विधवा होना पूर्व जन्म के पापों का फल समझा जाता था।''[24] ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के प्रयासों से विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856 ई.[25] के रूप में कानून मान्य हो गया। ऐसी स्थिति में झांसी के महाराज गंगाधर राव की मृत्यृ पश्चात् महारानी लक्ष्मीबाई के पास तीन रास्ते थे– पहला, गंगाधर राव के साथ सती हो जाना। दूसरा, पुनर्विवाह कर लेना और तीसरा, अंग्रेजों के इच्छानुसार जीवन जीना। किन्तु लक्ष्मीबाई ने तीनों ही रास्तों को ठुकरा दिया और एक ऐसा रास्ता चुना, जिसमें जीवन संघर्षमय था और मृत्यु जीवन से ज्यादा करीब थी। इस रास्ते ने महारानी लक्ष्मीबाई को मर कर भी अमर बना दिया। महारानी लक्ष्मीबाई आज भी जीवित हैं प्रेरणा बन कर, महिला सशक्तिकरण की मिसाल बनकर– कई कवियों की रचनाओं में। उदाहरणस्वरूप सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता की कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं–

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में आई फिर से नयी जवानी थी,

गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।
चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरान थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झांसी वाली रानी थी।[26]

अंततः, इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि महारानी लक्ष्मीबाई के अलावा अन्य महिलाएँ भी महिला सशक्तिकरण की परिचायक हैं, किन्तु जब बात स्वतन्त्रता आन्दोलन की होती है तो जेहन में तुरंत महारानी लक्ष्मीबाई का ही नाम आता है। तात्पर्य यह है कि आधुनिक भारत के इतिहास में जब महिलाओं को कई संगठन, कई व्यक्तित्व जागृत कर सशक्त करने का प्रयास कर रहे थे, तब सबसे अधिक कोई लोगों के करीब थीं, तो वो झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई थीं। 1857 ई. की अभूतपूर्व क्रांति के कई दिग्गजों के बीच यदि एक महिला का प्रभाव सबसे अधिक होना और उसकी मौत पर उसके शत्रु को ही कहना पड़ जाए कि सभी विद्रोहियों में लक्ष्मीबाई सबसे ज्यादा बहादुर और नेतृत्व कुशल थीं। सभी बागियों के बीच वही एक मर्द थीं... तो भला ऐसी शख्सियत से कोई महिला प्रेरणा क्यों न ले और उसे महिला सशक्तिकरण की परिचायक क्यों न माने...

सन्दर्भ :–

1. https://historyinhindi.in/bharat-pratham-jauhar/
2. https://hi.wikipedia.org/wiki/महिला सशक्तिकरण
3. डॉ. अंजना वर्मा एवं डॉ. रश्मि सोमवंशी–भारतीय नारी, ज्वलनशील मुद्दे, को–ऑपरेशन पब्लिकेशन्स, जयपुर, राजस्थान, आईएसबीएन : 978–93–83147–54–0, संस्करण 2017, पृ.क्र. 15.
4. https://hindi.webdunia.com/religion-sanatan-dharma-ved/four-vedas-in-hindi
5. डॉ. ऋतु अग्रवाल– महिलाओं की पहचान एवं सशक्तिकरण, माधव प्रकाशन, आगरा, उ.प्र., आईएसबीएनः 978–93–82331–22–3, संस्करण, 2017, पृ.क्र. 2
6. https://www.allstudyjournal.com/article/397/2-4-103-741.pdf
7. पूर्वोद्धृत क्र. 5
8. डॉ. सुरेश चन्द्र शुक्ला व डॉ. अर्चना शुक्ला–भारतीय इतिहास में नारी, मातुश्री पब्लिकेशन, रायपुर, छ.ग., आईएसबीएनः 978–81–939385–5–3, संस्करण 2019, पृ.क्र. 4–15
9. https://www.kailasheducation.com/2021/03/madhyakalin-bhartiya-itihas-ke-srot.html
10. हरिश्चंद्र वर्मा–मध्यकालीन भारत (750 से 1540 ई.), हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2003 ई., पृ.क्र. 132–134
11. डॉ. कामेश्वर प्रसाद– भारत का इतिहास (1526 से 1757 ई.), भारती भवन, पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पटना, बिहार, संस्करण 1999, पृ.क्र. 4
12. पूर्वोद्धृत क्र. 8, पृ. क्र. 245–247
13. https://bharatdiscovery.org/india
14. https://navbharattimes.indiatimes.com/education
15. माइकल एडवर्ड–रेड ईयर : द इण्डियन रिबेलियन ऑफ 1857, स्फीयर प्रकाशन, लंदन, पृ.क्र. 126
16. डी. वी. पारसनित– झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, इलाहाबाद, 1964 ई., पृ.क्र. 18
17. https://hi.wikipedia.org/wiki/रानी_लक्ष्मीबाई
18. प्रोफेसर बिपिन चन्द्र व अन्य– भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2002 ई., पृ.क्र. 3
19. एस.के. पाण्डेय– आधुनिक भारत, प्रयाग पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृ. क्र. 143
20. https://www.prabhasakshi.com/personality/rani-lakshmi-bai-death
21. आधुनिक भारत का इतिहास– शिव कुमार ओझा, बौद्धिक प्रकाशन, इलाहाबाद, आईएसबीएनः 978–93–85553–02–08, पृ. क्र. 124
22. https://www.prabhatkhabar.com/national/1333857
23. Hindimotive99.com
24. डॉ. एस. एल. वरे– भारतीय इतिहास में नारी, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल, आईएसबीएनः 978–93–82863–23–0, संस्करण 2019, पृ. क्र. 59
25. डॉ. शशि कला सिंह–महिला सशक्तीकरण, इंस्टीट्यूट फॉर सोशल डेवलपमेंट फॉर रिसर्च, रांची, झारखण्ड, आईएसबीएनः 978–81–923984–5–7, संस्करण 2014, पृ. क्र. 71
26. https://www.hindisahityadarpan.in/2018/09/jhansi-wali-rani-thi-subhadra-chauhan.html

❐❐❐